यदि शिक्षा की अवहेलना की जाती हैं, तो राज्य चाहे कुछ भी करे उसका कोई महत्व नहीं हैं।
शिक्षा के उद्देश्य
प्लेटो के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य न्याय को साकार करना हैं। प्लेटो के मुताबिक शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. राजनीतिक

इसका प्रथम उद्देश्य अभिभावक वर्ग को प्रशासन तथा संरक्षण के कार्यों में विशेषज्ञ बनाना हैं।

2. सामाजिक

इसका दूसरा उद्देश्य संरक्षक वर्ग में साहस की भावना भरना हैं।

3. शारीरिक व आत्मिक

शिक्षा का उद्देश्य शरीर व आत्मा के समुचित विकास के लिये प्रशिक्षण देना हैं।

4. अनुभूतिक व क्रियात्मक

प्लेटो का मत हैं कि व्यक्ति को जानना और इसकी अनुभूति करना आवश्यक हैं कि वह समाज की एक इकाई है और अपने सामाजिक व्यक्तित्व के कारण समाज के प्रति उसके विशिष्ट कर्त्तव्य हैं, यह बताना शिक्षा का उद्देश्य हैं।

5. व्यक्तिगत

प्लेटो के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का सर्वांगींण विकास भी हैं।
प्लेटो की शिक्षा-योजना यहीं समाप्त नहीं होती। दार्शनिक शासक 35 से 50 वर्ष तक की उम्र में राज्य की सेवा करेंगे। राज्य का सर्वोच्च अधिकारी होते हुए भी वह समाज का सेवक हैं। 50 वर्ष की आयु पूरी करने के बाद वे आने वाले अन्य शासकों के लिए स्थान छोड़ेंगे पर उन्हें राज्य की विभिन्न गतिविधियों से सक्रिय रूप से जोड़े रखा जाएगा। साथ ही वे शुभ के विचार का चिन्तन भी करते रहेंगे। आवश्यक होने पर राज्य की सेवा भी करेंगे।

इस रूप में प्लेटो की शिक्षा-योजना जीवन पर्यन्त की योजना हैं। प्रारंभिक शिक्षा सैनिक वर्ग का निर्माण

करती हैं, जो समाज की सेवा करेगा। उच्च शिक्षा शासक वर्ग का निर्माण करती हैं जो समाज की व्यवस्थाओं का संचालन करेगा।

प्लेटो के शिक्षा सिद्धांत की विशेषताएं
प्लेटो के शिक्षा योजना की आलोचना
उपरोक्त विशेषताओं के बाद भी प्लेटो की शिक्षा व्यवस्था में अनेक अवगुण विद्यमान थे, जिनके आधार पर प्लेटो की शिक्षा की कड़ी आलोचना की गयी थी, जो निम्नलिखित हैं–

1. उत्पादकों के लिए शिक्षा नहीं

प्लेटो की शिक्षा योजना में सबसे बड़ा दोष तो यह है कि वह उत्पादकों अथवा श्रमिकों के लिए शिक्षा की व्यवस्था नहीं करता। क्या उन्हें अच्छा नागरिक बनने तथा अपना कार्य अच्छी तरह सीखने की शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए थीं?

सैबाइन के शब्दों में," यह योजना व्यावसायिक शिक्षा को शिक्षा नहीं मानती।"

2. पाठ्यक्रम की अवधि बहुत अधिक

प्लेटो की उच्च शिक्षा की अवधी बहुत लम्बी हैं। 35 वर्ष की आयु तक सैद्धान्तिक शिक्षा चलती रहती हैं। उसके बाद भी 15 वर्ष तक व्यावहारिक शिक्षा चलती हैं। 50 वर्ष तक तो शिक्षा प्राप्त करते-करते व्यक्ति बूढ़ा हो जाएगा।

3. साहित्य एवं कला की उपेक्षा

प्लेटो साहित्य एवं कला को भी संगीत की परिधि में लेता है और वह उन पर शासन का पूर्ण नियन्त्रण चाहता हैं। वह कवियों और कविताओं को झूठा मानता हैं।

कैटलिन के शब्दों में," प्लेटो कवियों को झूठा कहकर दरवाजे के बाहर कर देता हैं।" यह उचित नहीं।

4. गणित आदि पर अधिक बल

प्लेटो ने अपनी शिक्षा योजना में गणित आदि विषयों पर बहुत बल दिया हैं। शिक्षा के क्षेत्र में गणित का निश्चित रूप से महत्व हैं, परन्तु प्रत्येक शासक को गणित का पण्डित होना चाहिए यह बात सर्वथा